क्या निराश हुआ जाए

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» निराशा का कारण और उसका असर

प्रश्न 1 (आसान). लेखक के मुताबिक निराशा किस वजह से होती है?
उत्तर – बार-बार ठगी, चोरी, तस्करी, भ्रष्टाचार जैसी खबरें और आरोप-प्रत्यारोप का माहौल देखकर मन बैठ जाना।

प्रश्न 2 (आसान). निराशा का असर सबसे पहले किस पर दिखता है?
उत्तर – लोगों की सोच पर–हर व्यक्ति पर संदेह की दृष्टि पड़ने लगती है।

प्रश्न 3 (मध्यम). लेखक ने 'हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है' क्यों कहा होगा?
उत्तर – क्योंकि लगातार बुरी खबरें और आरोपों का माहौल लोगों के भीतर भरोसा कम करता है, इसलिए वे बिना सोचे शक करने लगते हैं।

प्रश्न 4 (कठिन). अगर समाज में खूब आरोप-प्रत्यारोप चलें तो ईमानदार लोगों का मन क्यों विचलित होता है? लेखक के विचार के आधार पर 2 बातें लिखो।
उत्तर – 1) ईमानदार होने पर भी लोग भरोसा नहीं करते, इसलिए निराशा होती है। 2) ध्यान 'गुण' से हटकर 'दोष' ढूँढने पर चला जाता है, जिससे सही काम करने वाले का मन विचलित होता है।

» सुखी वही जो कुछ नहीं करता–क्यों गलत सोच है?

प्रश्न 5 (आसान). लेखक के मुताबिक काम करते ही लोग किस काम की तरफ ज़्यादा ध्यान देने लगते हैं?
उत्तर – दोष खोजने लगते हैं।

प्रश्न 6 (आसान). गुणों का क्या होता है जब दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाता है?
उत्तर – गुण भूल जाते हैं।

प्रश्न 7 (मध्यम). "सुखी वही जो कुछ नहीं करता" क्यों गलत सोच है? एक कारण लिखो।
उत्तर – क्योंकि काम पर दोष ढूँढना लोग करते हैं; दोष हर किसी में होते हैं–फिर भी गुण नहीं देखे जाते, और चिंता फैलती है।

प्रश्न 8 (कठिन). अगर समाज में 'दोषी ज्यादा दिखे और गुणी कम' की स्थिति बन जाए, तो लेखक के अनुसार क्या होगा और क्यों?
उत्तर – चिंता बढ़ेगी, क्योंकि लोगों की नजर दोष पर टिक जाती है, गुण और कोशिशें नजर नहीं आतीं–ईमानदार मेहनत करने वाले भी विचलित हो जाते हैं।

» भारत की आत्मा: भीतर के महान गुण

प्रश्न 9 (आसान). लोभ-मोह और काम-क्रोध मन में आना कैसा माना गया है?
उत्तर – स्वाभाविक रूप से मनुष्य में विद्यमान रहते हैं।

प्रश्न 10 (आसान). लेखक के अनुसार बुरा आचरण कब कहलाता है?
उत्तर – जब लोभ-मोह/काम-क्रोध को प्रधान शक्ति मानकर मन-बुद्धि उन्हीं के इशारे पर छोड़ दी जाए।

प्रश्न 11 (मध्यम). भौतिक संग्रह को सर्वोच्च क्यों नहीं माना गया?
उत्तर – क्योंकि चरम और परम मनुष्य के भीतर स्थिर आंतरिक महान गुण हैं, बाहर जमा की गई वस्तुएँ नहीं।

प्रश्न 12 (कठिन). लेख के अनुसार काम-काज/कानून बनने के बाद भी समस्या क्यों आ जाती है?
उत्तर – कुछ लोग लक्ष्य को भूल जाते हैं और अपनी सुख-सुविधा की ओर ज्यादा ध्यान देने लगते हैं, इसलिए मन पवित्र नहीं रहता।

» कानून और धर्म का अंतर

प्रश्न 13 (आसान). कानून मुख्य रूप से क्या करता है?
उत्तर – बाहर के नियम बनाकर व्यवस्था चलाता है।

प्रश्न 14 (आसान). धर्म का आधार किससे जुड़ा होता है?
उत्तर – सत्य, ईमानदारी और नैतिकता–यानी अंदर की सही-बोध से।

प्रश्न 15 (मध्यम). अगर कोई व्यक्ति कानून की खामी का फायदा उठाकर बच निकलता है, तो धर्म की दृष्टि से क्या स्थिति बनेगी?
उत्तर – धर्म की दृष्टि से वह फिर भी गलत/धोखा ही माना जाएगा, क्योंकि धर्म नैतिकता देखता है, सिर्फ कानूनी पकड़ नहीं।

प्रश्न 16 (कठिन). लेखक 'अवसरवादी लोगों' के कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने की बात क्यों करते हैं? एक कारण समझाइए।
उत्तर – जब कानून और धर्म अलग मान लिए जाते हैं, तब कुछ लोग नैतिकता की बजाय सिर्फ नियमों की पकड़/खामी देखते हैं। इसलिए वे कानून की त्रुटियों से बच निकलने की सोचते हैं और गलत को सही समझने लगते हैं।

» आस्था बनी रहती है: सेवा, ईमानदारी, सचाई

प्रश्न 17 (आसान). लेखक के अनुसार आस्था किन मूल्यों से बनी रहती है?
उत्तर – सेवा, ईमानदारी और सचाई से।

प्रश्न 18 (आसान). 'भ्रष्टाचार पर आक्रोश' हमें क्या दिखाता है?
उत्तर – लोग गलत को पहचानते हैं और गलत तरीकों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं।

प्रश्न 19 (मध्यम). अगर किसी ने कहा 'झूठ बोलो तो नुकसान नहीं, पकड़े नहीं जाएँगे'–तो लेखक की बात के हिसाब से इसका जवाब क्या होगा?
उत्तर – आस्था अंदर की नैतिकता है; झूठ/चोरी को गलत समझना जरूरी है, पकड़े जाने का डर आस्था का आधार नहीं है।

प्रश्न 20 (कठिन). लेखक कहता है कि बुराइयाँ दब जाती हैं पर नष्ट नहीं होतीं। सेवा, ईमानदारी और सचाई को कैसे 'विरोध/कसौटी' की तरह समझा जा सकता है?
उत्तर – सेवा गलत के असर को घटाती है (दूसरों को नुकसान नहीं), ईमानदारी गलत लाभ रोकती है, और सचाई झूठ-चोरी को 'गलत' मानकर उसे टिकने नहीं देती–इस तरह ये मूल्य आस्था की कसौटी बनते हैं।

» दोषों का पर्दाफाश: सही उद्देश्य बनाम रस लेना

प्रश्न 21 (आसान). दोषों का पर्दाफाश अपने आप में बुरा है या नहीं?
उत्तर – बुरा नहीं है; बुराई तब होती है जब उसमें गलत पक्ष उजागर करने में रस लेने लगे।

प्रश्न 22 (आसान). रस लेना कब माना जाएगा?
उत्तर – जब गलत उजागर करने में मज़ा/खुशी हो और उसे एकमात्र कर्तव्य मान लिया जाए।

प्रश्न 23 (मध्यम). अगर कोई सिर्फ गलत बातें ही बताता रहे और अच्छाई की कोई तारीफ न करे, तो लेखक के हिसाब से क्या समस्या होगी?
उत्तर – अच्छाई को उतनी ही भावना से उजागर न करना और घटनाओं का पक्षपात–दोनों से लोक-चित्त में अच्छाई की भावना कमजोर पड़ती है।

प्रश्न 24 (कठिन). दो छात्रों में अंतर कैसे तय करोगे: छात्र A गलती सुधारने के लिए बताता है, छात्र B गलती पर बार-बार हँसता है–दोनों "सच" बोलने का दावा करते हैं। सही नैतिक कसौटी क्या होगी?
उत्तर – कसौटी उद्देश्य और भावना है: सुधार के लिए दोष बताना सही; दोष उजागर करने में रस लेना/मजाक बनाना गलत। साथ ही क्या अच्छाई को भी उतनी ही भावना से उजागर किया जाता है या नहीं–यह भी देखना है।

» उदाहरणों से सीख: टिकट बाबू और बस कंडक्टर

प्रश्न 25 (आसान). टिकट बाबू ने रुपये लौटाए तो वो कौन-सी अच्छाई दिखा रहा था?
उत्तर – ईमानदारी और जिम्मेदारी

प्रश्न 26 (आसान). बस में कंडक्टर ने बच्चों के लिए क्या किया?
उत्तर – पानी और थोड़ा दूध देकर उनका रोना कम किया

प्रश्न 27 (मध्यम). लेखक ने 'टिकट बाबू' और 'बस कंडक्टर'–दो उदाहरण क्यों चुने?
उत्तर – ताकि दिखे कि धोखे के बावजूद मानवीयता बची रहती है–एक जगह पैसे सही लौटाना और दूसरी जगह संकट में मदद/सहारा देना

प्रश्न 28 (कठिन). अगर धोखा/ठगी हो जाए तो भी लेखक 'आशा' क्यों कहता है? इस अध्याय के तर्क को अपने शब्दों में लिखो।
उत्तर – क्योंकि लेखक दिखाता है कि हर जगह धोखा ही नहीं होता; कुछ लोग गलत होने पर जिम्मेदारी निभाते हैं और संकट में इंसानियत दिखाते हैं। इसलिए निराश होकर उम्मीद छोड़ना सही नहीं है।

» अंतिम निष्कर्ष: निराश न होना, आशा रखना

प्रश्न 29 (आसान). लेखक ने धोखा खाने के बाद भी निराश क्यों नहीं होने की बात कही?
उत्तर – क्योंकि धोखा एक घटना है; अच्छाई और मदद देने वाली घटनाएँ बहुत कम नहीं हैं–आशा नहीं बुझनी चाहिए।

प्रश्न 30 (आसान). 'संदेह की प्रवृत्ति' पालना क्यों नुकसान कर सकता है?
उत्तर – क्योंकि शक बढ़ने लगता है और भरोसा व मदद की उम्मीद कमजोर पड़ जाती है।

प्रश्न 31 (मध्यम). इंसान-निर्मित तरीकों को बदलने का मतलब क्या है, लेखक की सोच के अनुसार?
उत्तर – जो नियम/व्यवस्था/तरीका गलत या नुकसानदेह हो उसे पहचानकर सुधार की कोशिश करना, बस टूटकर बैठना नहीं।

प्रश्न 32 (कठिन). अगर किसी व्यक्ति को लगातार झूठे वादे मिलें, तब भी 'आशा की ज्योति' बुझने न देने के लिए उसे क्या करना चाहिए?
उत्तर – सिर्फ हर बात पर शक करके खुद को बंद नहीं करना चाहिए; सच की जाँच करे, सही लोगों/सही माध्यम तक बात पहुँचाए, जरूरत पड़े तो व्यवस्था में बदलाव के लिए कदम उठाए, और भलाई/मदद की वास्तविक घटनाओं को देखकर भरोसा बनाए रखे।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. अखबार में एक महीने तक रोज़ भ्रष्टाचार और ठगी की खबरें आती रहीं। लेखक के अनुसार बताइए–(1) निराशा का कारण क्या बनेगा? (2) इसका असर लोगों के व्यवहार पर कैसे पड़ेगा?

› पहले कारण देखो: बार-बार बुरी खबरें और आरोप-प्रत्यारोप का माहौल
› फिर असर देखो: लोगों की निगाह शक की तरफ मुड़ जाना
› तीसरा नतीजा लिखो: ईमानदार लोगों का मन भी विचलित होना

उत्तर – (1) निराशा का कारण बनेगा बार-बार ठगी/चोरी/भ्रष्टाचार जैसी खबरें और आरोप-प्रत्यारोप वाला माहौल। (2) असर होगा कि लोग हर व्यक्ति को शक की दृष्टि से देखने लगेंगे और ईमानदार लोगों का मन भी टूटने/विचलित होने लगेगा।

उदाहरण 2. एक लड़का पढ़ाई शुरू करता है। कुछ लोग कहते हैं, "तुम्हारी पढ़ाई में गलती निकल आएगी, इसलिए मत पढ़ो।" लेखक के अनुसार बताओ–इस सोच में क्या गलत है और सही निष्कर्ष क्या होना चाहिए?

› देखो लोगों का तरीका क्या है: वे पढ़ाई के गुण गिनने की जगह गलती/दोष ढूँढते हैं।

› लेखक के अनुसार दोष हर किसी में कुछ न कुछ होता है; दोष ढूँढना आसान है।

› जब गुण भुला दिए जाते हैं और दोष बढ़ा-चढ़ाकर दिखते हैं, तब डर और चिंता फैलती है।

› इसलिए गलत निष्कर्ष "कुछ मत करो" नहीं होना चाहिए; सही निष्कर्ष "काम करते रहो और दोष-खोज की जगह सुधार/समझ अपनाओ" होना चाहिए।

उत्तर – दोष हर व्यक्ति में होते हैं; समस्या दोष में नहीं, दोष-खोज वाली नजर में है। इसलिए "कुछ मत करो" वाला निष्कर्ष गलत है–काम करना जारी रखो और सुधार की सोच रखो।

उदाहरण 3. मान लो एक छात्र को प्रतियोगिता में अच्छा प्रदर्शन करना है। उसे लगता है कि "मैं थोड़ा गलत तरीके से भी कर लूं तो जल्दी जीत जाऊँगा।" उसे यह भी पता है कि यह गलत है। लेखक के अनुसार उसे क्या करना चाहिए ताकि भीतर के महान गुण प्रधान बने रहें?

› पहचानो कि लोभ-मोह वाली बात मन में आ रही है–यह स्वाभाविक है।

› लेकिन उसे "प्रधान शक्ति" मत बनने दो–मन-बुद्धि को उस इशारे पर मत छोड़ो।

› सही लक्ष्य याद रखो: मेहनत, अभ्यास, ईमानदारी।

› संयम अपनाओ: खुद को रोककर नियमों के मुताबिक तैयारी करो।

› फिर देखो, परिणाम वही आएगा जो भीतर के स्थिर गुणों (ईमानदारी, नियंत्रण) से बनेगा।

उत्तर – उसे लोभ वाली सोच को रोककर अपने लक्ष्य (ईमानदारी और मेहनत) को प्रधान रखना चाहिए; मन-बुद्धि को गलत इशारे पर छोड़ने के बजाय संयम से निर्णय लेना चाहिए।

उदाहरण 4. एक छात्र परीक्षा में नकल करने की कोशिश करता है। उसे लगता है कि अगर टीचर न पकड़ पाए तो वह कानून/नियम के हिसाब से बच जाएगा। बताओ–लेखक के अनुसार इसमें कानून और धर्म का अंतर कैसे समझोगे?

› कानून/नियम क्या करते हैं–वे बाहर की कार्रवाई/दंड तय करते हैं, "पकड़े जाने" पर असर होता है।

› धर्म/नैतिकता क्या देखती है–यह भीतर की ईमानदारी और सचाई पर टिका है।

› अगर नकल सफल हो भी जाए, तब भी वह धोखा और बेईमानी बनी रहती है, क्योंकि धर्म का उल्लंघन अंदर से होता है।

› इसलिए सही रास्ता यह है कि नकल की "कमी/छूट" खोजने के बजाय नैतिक सही आचरण चुना जाए।

उत्तर – कानून/नियम पकड़े जाने पर दंड देता है, लेकिन धर्मीय/नैतिकता पकड़े जाने से पहले तय करती है कि नकल करना गलत है। इसलिए केवल "कानून से बच गए" मानना सही नहीं–असल कसौटी धर्म/ईमानदारी है।

उदाहरण 5. मान लो एक युवक ने बताया कि "मैं नियम तोड़कर काम कर रहा हूँ, पर पकड़ा नहीं तो क्या?" लेखक के बताए मूल्यों–सेवा, ईमानदारी, सचाई–के आधार पर बताओ कि यह सोच क्यों गलत है।

› पहले समझो: पकड़े जाने/न पकड़े जाने की बात बाहर की 'चाल' है, आस्था अंदर की नैतिकता से आती है।

› फिर देखें: क्या यह काम किसी की पीड़ा बढ़ा रहा है? अगर हाँ, तो सेवा नहीं हो रही।

› जाँच करो: क्या यह फायदा गलत तरीके से लिया जा रहा है? अगर हाँ, तो ईमानदारी टूट रही है।

› जाँच करो: क्या सच छुपाकर/झूठ बोलकर काम चल रहा है? अगर हाँ, तो सचाई से दूरी है।

› निष्कर्ष निकालो: लेखक के मूल्यों के अनुसार गलत को सही ठहराना आस्था को कमजोर करता है, चाहे परिणाम कुछ भी हो।

उत्तर – यह सोच गलत है क्योंकि सेवा, ईमानदारी और सचाई का साथ अंदर की नैतिकता तय करती है; 'पकड़ा नहीं' आस्था का पैमाना नहीं है। जो काम गलत तरीके से फायदा देता है, दूसरों को नुकसान करता है या झूठ-चोरी पर टिका है, वह आस्था के खिलाफ है।

उदाहरण 6. एक छात्र हर दिन क्लास में किसी न किसी की गलती पकड़कर मज़ाक उड़ाता है। वह कहता है, "मैं तो सच उजागर कर रहा हूँ।" टीचर उससे पूछती हैं–क्या तुम्हारा मकसद सुधार है या रस? तुम कैसे तय करोगे कि उसका दृष्टिकोण सही है या गलत?

› पहले मकसद पहचानो: क्या वह गलती सुधारने के लिए बता रहा है या बस हँसने/खुश होने के लिए?

› देखो क्या वह सिर्फ दोष ही चुन रहा है–अच्छा काम भी उतनी ही भावना से बोलता है या नहीं?

› जाँचो कि क्या वह "एकमात्र कर्तव्य" की तरह हर जगह गलत खोजता रहता है, जबकि जरूरी सकारात्मक बात भी छोड़ देता है?

› फिर देखो प्रभाव: क्या इससे लोक-चित्त में सीख और अच्छाई की भावना बढ़ रही है, या डर/नफरत बढ़ रही है?

उत्तर – यदि छात्र गलती पकड़कर मज़ाक और आनंद ले रहा है, सिर्फ गलत चुनता है, अच्छाई की तारीफ नहीं करता और उसका व्यवहार सुधार के बजाय बदनामी/रस पर टिका है, तो उसका दृष्टिकोण गलत है। सही दृष्टिकोण वही है जिसमें दोष सुधार के लिए बताया जाए और अच्छाई को भी समान रूप से उजागर किया जाए।

उदाहरण 7. एक बच्चे ने गलती से स्टेशन पर टिकट के लिए सही पैसे की जगह गलत नोट दे दिया और जल्दी-जल्दी ट्रेन में बैठ गया। कुछ देर बाद टिकट बाबू ने उसे पहचान लिया और अतिरिक्त रुपये लौटाए। इस उदाहरण से लेखक 'ईमानदारी की शक्ति' के बारे में क्या सीख देता है?

› गलती हो जाती है–पर जिम्मेदारी निभानी पड़ती है

› टिकट बाबू पैसे लौटाता है, इसलिए कानून/नियम के साथ इंसाफ होता है

› वो विनम्रता से लौटाता है–यानी ईमानदारी में घमंड नहीं होता

› इससे समझ आता है कि धोखे का असर इंसानियत को खत्म नहीं करता

उत्तर – लेखक यह सीख देता है कि गलती हो भी जाए, ईमानदारी का असली रूप जिम्मेदारी निभाकर सही करना है–विनम्रता के साथ पैसे लौटाना 'ईमानदारी की शक्ति' दिखाता है।

उदाहरण 8. मान लो लेखक जैसा एक विद्यार्थी परीक्षा के समय ठगा गया। कुछ लोग कहें कि 'अब सभी पर शक करो।' विद्यार्थी को लेखक के निष्कर्ष के अनुसार क्या सोच बदलनी चाहिए और कैसे आगे बढ़ना चाहिए?

› धोखा स्वीकार करो, लेकिन उसे पूरी इंसानी दुनिया का अंतिम सच मत बनाओ।

› 'संदेह' पालने की जगह सच की जाँच और सही रास्ता चुनो।

› जो व्यवस्था/तरीका गलत या कमजोर है, उसे बदलने की कोशिश करो (शिकायत/सुधार/जिम्मेदार तक बात)।

› छोटी मदद और हिम्मत देने वाली घटनाओं को नोटिस करो–आशा की ज्योति बुझने मत दो।

उत्तर – विद्यार्थी धोखे से सीख लेकर सही जाँच करे, संदेह को आदत न बनाए, व्यवस्था/तरीके में सुधार के लिए सही कदम उठाए और फिर भी आशा रखे–निराश न हो।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- उत्तर हमेशा 'कारण + असर' फॉर्मेट में लिखो।
- लेखक का तर्क लिखो: दोष हर जगह–समस्या नजर की सोच है।
- उत्तर लिखते समय 2 बातें जरूर लिखना: 'प्रधान शक्ति' और 'भीतर के महान गुण'।
- उत्तर में लिखो: "कानून व्यवस्था", "धर्म नैतिकता"–और अवसरवाद कैसे बढ़ता है।
- बोर्ड/लिखित उत्तर में 'भ्रष्टाचार पर आक्रोश = गलत की पहचान' जरूर लिखना।
- NCERT में 'उद्देश्य' और 'भावना' वाले शब्दों को उत्तर में जरूर लिखो।
- उत्तर लिखते समय 'टिकट बाबू' और 'कंडक्टर'–दोनों कर्म अलग-अलग बिंदुओं में जरूर लिखो।
- उत्तर लिखते समय 3 बिंदु जरूर लिखो: संदेह न पालना, तरीके बदलना, आशा बनाए रखना।

एक नज़र में रिवीज़न

› - कारण: बुरी खबरें/आरोप-प्रत्यारोप, असर: शक और मन का विचलन
› दोष खोजो नहीं, गुण देखो–यही चिंता रोकता है।
› - भीतर के गुण प्रधान, लोभ-मोह प्रधान नहीं।
› - कानून: बाहर, धर्म: भीतर–धर्म धोखा नहीं
› से-ई-स: सेवा, ईमानदारी, सचाई–आस्था की कसौटी
› दोष सुधार के लिए, मज़ा के लिए नहीं–साथ में अच्छाई भी उजागर
› टिकट-बाबू: पैसे लौटाए; कंडक्टर: संकट में सहारा
› धोखा = सीख, निराशा = नहीं; संदेह = नहीं, आशा = हाँ